EXCEL
public school

दिल के आईने से

साहित्य समाज का सजीव चित्र है, जिसमें पीढ़ियाँ अपनी संस्कृति, सभ्यता और इतिहास की झलक पाती हैं। यह केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि समय के साथ होने वाले राजनीतिक और सामाजिक बदलावों का प्रतिबिंब भी है। साहित्य की नींव भाषा है, और यह सत्य है कि कोई भी भाषा साधारण नहीं होती। हर भाषा अपने साथ एक विशिष्ट संस्कृति और पहचान लेकर आती है।

आज, जब हम वैश्विक नागरिक बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं, हर भाषा का महत्व और बढ़ जाता है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी व्यक्तिगत और सामाजिक धरोहर है। हिंदी, एक प्राचीन भाषा होने के नाते, न केवल अन्य भाषाओं को जन्म देती आई है, बल्कि अनेक भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात करती रही है।

हमारे विद्यालय में बच्चों के भाषा कौशल को निखारने के लिए निरंतर प्रयास किए जाते हैं, ताकि वे साहित्य के इस महासागर में अपनी प्यास को पहचानें और इसे तृप्त कर सकें। अकसर, हमें अपनी ही प्यास का पता नहीं होता, जब तक कोई हमें उसके एहसास तक न पहुँचा दे। जैसे तपते जेठ में धरती को बारिश की पहली फुहार प्यास का एहसास दिलाती है, वैसे ही एक साहित्यिक प्रयास बच्चों में इस प्यास को जगाता है।

हमारा विश्वास है कि साहित्य की यह यात्रा तब सार्थक होगी जब आप सभी इसमें हमारे सहयात्री बनेंगे। आइए, इस धड़कन की गूँज को हम सब मिलकर सुनें और महसूस करें।

बाल मन की दुनिया

गर्मी

गर्मी आई गर्मी आई।
धूप पसीना लेकर आई।
सूरज सिर पर चढ़ जाता है,
अग्नि आग बरसाता है।

- अभिज्ञान वेदांत भूषण
कक्षा 3 'ए' विभाग

रिया रानी

रिया मेरी रानी है,
लगती बड़ी सयानी है।
गोरे-गोरे गाल हैं,
काले काले बाल हैं।
साड़ी पीली-पीली है,
आँखें नीली-नीली हैं।
गले में पड़ा हार है,
सबको रिया से प्यार है।

- रिया रंका
कक्षा 3 'सी' विभाग

जगह-जगह पानी

बारिश बारिश हर जगह
पानी पानी हर जगह।
नहीं था पानी पीने को
अब पानी बहता है।
खेतों को चाहिए पानी
फसलों को चाहिए पानी
मुझे पसंद है पानी,
मेरा नाम है सुहानी।

- सुहानी अवनीश
कक्षा 3 'सी' विभाग

गुड़िया

गुड़िया मेरी प्यारी हँसती मुस्काती,
रंग बिरंगी चूड़ियाँ पहनकर नाचती है।
छोटे से हाथ हैं बिंदी भी लगती है।
गाना गाकर सबको खुशियाँ बाँटती है।

- शार्वि आर
कक्षा 3 'सी' विभाग

चिड़िया

एक-एक तिनका जोड़कर चिड़िया
अपना घर बनाती है।
धूप, हवा, बारिश से
अपने परिवार को बचाती है।
मेहनत से तुम न घबराना
हम सबको सिखलाती है।
छोटे-छोटे हाथों से वहाँ
बड़े काम कर जाती है।

- अन्वी रमेश
कक्षा 5 'एच' विभाग

बादल

बादल गरजे गर गर गर
पानी आया जल जल जल।
मोर नाचे छम छम छम
भागो भागो तुम और हम।

- अक्षोभ्या गणेश
कक्षा 3 'ए' विभाग

समय

समय का जो रखे ध्यान,
जग में होता उसका मान।
समय को जो खोता है,
बाद में रोता रहता है।
समय कभी नहीं रुकता है।

मौन्विका वै
कक्षा 3 'बी' विभाग

तितली

सुबह सवेरे आती तितली,
फूल -फूल पर चलती तितली।
रंग बिरंगे पंख सजाए,
सबके मन को भाती तितली।

- समैरा ए
कक्षा 3 'बी' विभाग

दोस्ती

साथ चलते हैं हम हर राह पर,
दिल प्रेम और त्याग के धानी से,
जड़ा एक विश्वास है दोस्ती।

- गृहिका एस
कक्षा 3 'बी' विभाग

खेल कबड्डी

खेल कबड्डी तू जान है,
मेरी तुझे तो पहचान है।
मेरी कबड्डी तुझे सम्मान है,
मिला क्रिकेट जितना पहचान ना।
अपने देश की कहानी है,
तू समता की मेल है, संस्कृति का खेल है,
इस खेल के खिलाड़ी और खेल को जितना पहचान मिलेगा।
कबड्डी हमारी जान है,
यहाँ खेल नहीं है,
इसमें दम निकल जाता है,
कबड्डी प्रिय खेल है।

- स्वदेश सी एम
कक्षा 3 'सी' विभाग

मेरी प्यारी फूल

फूल खूबसूरत और रंग बिरंगी होते हैं। हर फूलों में अपनी अलग खुशबू होती है। फूल मनमोहक होते हैं। उन्हें देखकर हमारा मन प्रसन्न होता है। अलग-अलग मौसम में अलग-अलग फूल लगते हैं, कई फूल हर मौसम में मिलते हैं। प्रकृति द्वारा दिया गया एक सुंदर उपहार फूल है। फूल देवताओं की पूजा में इस्तेमाल किया जाता है। फूल को देखकर हमें शांति और सुकून का एहसास होता है। फूलों को पुष्प नाम से भी जाना जाता है।

- प्रेक्षा एस
कक्षा 3 'सी' विभाग

हर किसी का देवदूत

एक बार की बात है, स्वर्ग से एक बच्चे को धरती पर भेजा जा रहा था। जाने से पहले बच्चे ने भगवान से पूछा, "मैं अभी भी छोटा हूँ और मैं अपना ख्याल रखना नहीं जानता। मुझे कोई चाहिए जो मेरा ख्याल रखे।" यह सुनने के बाद भगवान ने कहा, "चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। पृथ्वी पर मैं तुम्हारे लिए एक देवदूत को भेजता हूँ वह तुम्हारी अच्छी तरह देखभाल करेगी।" तब बच्चे ने पूछा, "देवदूत का नाम क्या है?" भगवान ने उत्तर दिया, "तुम्हें उसका नाम जानने की जरूरत नहीं है, तुम बस उसे माँ कहोगे।"

- दिया नरेन
कक्षा 5 'एच' विभाग

- मिहिर काली चरण
कक्षा 3 'सी' विभाग

चिड़िया और तितली

एक चिड़िया थी, एक छिपकली और एक तितली थी। एक दिन एक शिकारी आया, वह चिड़िया पकड़ना चाहता था। तितली का इशारा पाकर चिड़िया उड़ गई। छिपकली तितली खाना चाहती थी। छिपकली बाहर निकली और तितली पर हमला करने ही वाली थी कि चिड़िया ने छिपकली पर हमला किया। तितली उड़ गई और चिड़िया भी बच गई तितली चिड़िया की मित्र बन गई। तभी एक सिपाही आया और उस शिकारी को पकड़ लिया। शिक्षा: एक दूसरे की मदद करो।

घने जंगल में भूत

एक समय की बात है। भूतगाँव नाम का एक गाँव था, और उसके ठीक बगल में एक जंगल था। उस जंगल में बहुत से लोग गए लेकिन कोई भी लौटे के नहीं आ पाया। तब न्यूज़ रिपोर्टर ने सोचा कि उस जंगल में कोई आत्मा है, जो लोगों को मार रही है। पाँच रिपोर्टर उसे जंगल के अंदर जाकर इसकी खोज करने के लिए अंदर गए। शुरू में उन्हें सब ठीक लगा था लेकिन जैसे-जैसे अंदर गहरे गए उन्हें बहुत सारे शव दिखाने लगे। उन्हें डर लगने लगा, पर वह हार नहीं माने। तभी एक पेड़ से एक डरावनी आवाज़ आयी। चार लोग डर के भाग गए, और भूत ने उनमें से एक की हत्या कर दी बाकी लोग उस शव को देखकर डर के मारे भागने लगे, लेकिन उस भूत ने उनकी हत्या कर दी। तब से सभी को पता चला कि उस जंगल के अंदर भूत है और तब से उस जंगल में कोई नहीं गया।

- चिरायु टी एच
कक्षा 5 'एच' विभाग

"सारे मानव-समाज को सुंदर बनाने की साधना का ही नाम साहित्य है।"

- हजारीप्रसाद द्विवेदी

मेरा भारत और उसकी महान भाषाएँ

मेरे भारत की महान भाषाएँ,
सुशोभित स्नेह की सरिताएँ।
संस्कृत से निज उद्भव लेकर,
द्रविड़ को गलबाही देकर,
भारत संस्कृति के सागर को
अर्पित करती निज धाराएँ,
मेरे भारत की महान भाषाएँ।
हिंदी, उर्दू या पंजाबी
कश्मीरी, सिंधी, गुजराती,
मणिपुरी, असमिया या बंगाली,
तमिल, तेलगू, राजस्थानी,
कन्नड़ा, मराठी, मलयाली,
सभी भाषाएँ गौरवशाली,
अंतरात्मा में भावना एक,
सब की समान ये इच्छाएँ,
मेरे भारत की महान भाषाएँ।
अपनी-अपनी लिपियाँ सुंदर,
बोलियाँ मधुर मनोहर,
सभी भाषाएँ आलिंगन करती,
अज्ञान तो दूर हो जाती,
मेरे भारत की महान भाषाएँ।
गौरवमय सबका है अतीत,
उज्ज्वल सबका है प्रतीत,
कर रही पूर्ण ये सब मिलकर,
जन-जन की मंगल आशाएँ,
मेरे भारत की महान भाषाएँ ।

-अविनाश जैन
हिंदी शिक्षक

सवेरा

सूरज निकला मिटा अँधेरा,
देखो बच्चों हुआ सवेरा।
आया मीठी हवा का फेरा,
चिड़ियों ने फिर छोड़ा बसेरा।
जागो बच्चों अब मत सोओ,
इतना सुंदर समय न खोओ।

- रुत्वि जैन
कक्षा 5 'सी' विभाग

बारिश

मुझे बारिश बहुत भाती है,
रंग-बिरंगी छतरी संग चलना अच्छा लगता है।
कागज़ की नावों से खेलता हूँ,
बारिश में रेनकोट पहनकर चलता हूँ।
छत से गिरते पानी में छप-छप करता हूँ,
दिन के अंत में, बड़ी रज़ाई में सोता हूँ।
बारिश की बूँदे मन को भाती हैं,
हर तरफ खुशियाँ लाती हैं।

आर्यन
कक्षा 4 'सी' विभाग

भारत की महानता

भारत देश महान हमारा,
संस्कृति और प्रेम का प्यारा।
विविधता में एकता की पहचान,
हर दिल में बसी ये जान।
हिमालय की ऊँचाई में,
गंगा-यमुना की शुद्ध धारा।
शूर वीरों की भूमि में,
बलिदान की अमर गाथा।
चलो मिलकर करें प्रण,
भारत को बनाए महान।
शांति, विकास और प्रेम से,
सबका हो सुंदर सम्मान।

-सुहानी सी
कक्षा 4 'बी' विभाग

मेरे सपनों की दुनिया

मेरे सपनों की दुनिया में हर कोई मुस्कराता है,
जहाँ सपनें और आशाएँ खिलते हैं।
यहाँ हर किसी के चेहरे पर खुशी है,
और हर दिल में उम्मीद की किरण है।
मेरे सपनों की दुनिया में कोई भेदभाव नहीं है,
जहाँ हर कोई समान है, हर कोई प्यारा है।
यहाँ हर किसी को अपने सपनों को पूरा करने का अवसर मिलता है,
और हर कोई अपने लक्ष्य को हासिल करता है।
मेरे सपनों की दुनिया में कोई भी चिंता नहीं है,
जहाँ हर कोई आनंदित है, हर कोई खुश है।
यहाँ हर किसी के दिल में प्रेम है,
और हर कोई एक दूसरे का सम्मान करता है।
मेरे सपनों की दुनिया एक सुंदर कल्पना है,
जहाँ हर कोई खुश है, हर कोई आनंदित है।
यहाँ हर किसी को अपने सपनों को पूरा करने का मौका मिलता है
और हर कोई अपने सपनों को पूरा करता है।

- बबिता के.जे
हिन्दी अध्यापिका

मेरी यात्रा

मैं अपने माता-पिता के साथ एक यात्रा में श्रीलंका गया था। वह दो दिन की यात्रा थी। सबसे पहले मैं कोलंबो पहुँचा। वहाँ से कैंडी गया। उसके बाद मैं समुद्र तट पर गया। दूसरे दिन हम एक किले में गए जहाँ मैंने ट्रेकिंग की और मैं बहुत थक गया था। मैंने वहाँ से एक मिट्टी का मास्क खरीदा। मैंने अपने परिवार के साथ वहाँ बहुत मज़ा किया।

- अद्वय डर्ला
कक्षा 6 'डी' विभाग

मेरा जन्म दिन

मुझे मेरा दसवां जन्मदिन अच्छा लगा क्योंकि मैं अपनी मनपसंद खरीददारी कर सकता था। मैं पहले मंदिर दर्शन करने के लिए गया फिर मैंने वहाँ खेलकूद किया और बाद में मुझे पता चला कि मैं कल गोवा घूमने के लिए जा रहा हूँ। मैं बहुत खुश हो गया और अपनी तैयारी में लग गया। इस खुशखबरी से मुझे अपना सपना पूरा होता हुआ लगा। मैं पूरी रात खुशी से सो भी नहीं पाया। बस वो इंतजार की घड़ी आ गयी। मैं अपने परिवार वालों के साथ दूसरे दिन घर से निकल गया और उधर उनके साथ बहुत मज़ा किया। तरह-तरह का खाना खाया। मैंने वहाँ बगीचे में बहुत तरह के पेड़-पौधे और जानवर देखें। हम लोगों ने पानी के साथ भी बहुत मज़े किए। हम लोगों को मेरे पापा के दोस्त की तरफ़ से एक फिल्म देखने का आमंत्रण भी मिला। गोवा में बहुत मज़ा करने के बाद मैं वापस अपने घर आ गया।

- अध्यव दुर्गद
कक्षा 6 'सी' विभाग

मेरी कश्मीर यात्रा

मैं अपने जन्मदिन पर कश्मीर गया था। मुझे वहाँ बर्फ़ के साथ खेलने में बहुत मज़ा आया। वहाँ मैं हवाई जहाज से गया था। जब मैंने हवाई जहाज की खिड़की से बाहर देखा तो मुझे बस पहाड़ और बर्फ़ ही दिखाई दे रहे थे और वह बहुत सुदंर थे। हवाई जहाज में मैनें एक सैंडविच, बिस्कुट और जूस पिया। ये सारी चीज़े बहुत स्वादिष्ट थीं। कश्मीर का खाना बहुत मीठा था और मुझे वह खाना बहुत पसंद आया। उसके अगले दिन हम बाहर घूमने गए। मैंने बर्फ़ के साथ बहुत मज़ा किया, तब से मेरी पसंदीदा जगह कश्मीर हो गई।

- अर्जुन वै बी
कक्षा 6 'डी' विभाग

मेरी यात्रा

मैं बैगलूरु से इंदौर तक हवाई जहाज़ में गया था। मैं सुबह नौ बजे अपने परिवार के साथ मैसूर से केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए निकला और हम ढाई बजे वहाँ पहुँच गए। हमारे जहाज का समय चार बजे था। हमने थोड़ी देर वहाँ मस्ती की और उसके बाद खाना खाया, तब शाम के सवा तीन बज रहे थे। हमारी बोर्डिंग साढ़े तीन बजे को शुरू होने वाली थी। हम गेट नम्बर इक्कीस पहुँचकर इंतजार करने लगे। वहाँ तक हमारी बोर्डिंग चालू हो गई थी। मैं शाम तीन पैंतालीस को हवाई जहाज़ में पहुँचा और हमारे विमान ने उड़ान भरी। सात बजे हम देवी अहिल्या बाई अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुँच गए। तीन दिन तक मस्ती करने के बाद हम वापस छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पहुँचे और उसके बाद वापस बैंगलुरु आ गए।

- दिव्यांश एस ए
कक्षा 6 'सी' विभाग

मेरा पहला दिवस ई.पी.एस में

मेरा नाम है गौरी नायर। मैं कक्षा 6 'सी' में पढ़ती हूँ। मैं आज आपको अपने ई. पी. एस में पहले दिन के बारे में बताती हूँ। जब मैं पहले इधर आई थी, मैं बहुत घबरा गई थी, लेकिन जब मैं कक्षा के अंदर गई तो कोई कुछ नहीं बोला, वह तो सब बात ही कर रहे थे। उस कारण से मेरी घबराहट बंद हो गई। मेरी अध्यापिका स्नेहा मेम ने हमारी कक्षा को एक मज़ेदार खेल से हमारा परिचय एक दूसरे से कराया। मुझे बहुत मज़ा आया। मेरे लिए वह सबसे विशेष दिन था।

- गौरी नायर
कक्षा 6 'सी' विभाग

मेरा बचपन

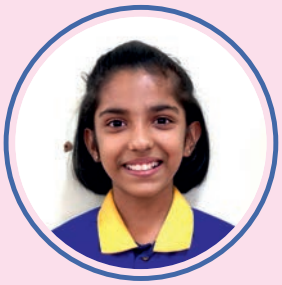

मेरा बचपन मस्ती और खुशी से बीता है। मम्मी की डाँट और पापा के प्यार से मैं बड़ी हुई हूँ। एक दिन मैं अपनी मम्मी के पास सो रही थी, तब मेरी मम्मी एक सेकेंन्ड के लिए बाहर गईं। तब मेरे भाई ने आ कर मुझे डरा दिया और मैं रोने लगी। तब मेरी मम्मी अंदर आ कर मेरे भाई को डाँटने लगीं। उस समय मुझे गुस्सा तो आ रहा था, मगर मैं अपने भाई को रोते हुए नहीं देख पाई। यही तो बात है भाईयों की, वे परेशान तो बेहद करते हैं मगर प्यार भी करते हैं। है ना ये एक जादू! यह तो है एक बचपन की याद।

- केनिशा
कक्षा 6 'बी' विभाग

मेरी बहन

मेरी बहन का नाम हास्या है। मेरे परिवार में चार सदस्य हैं। मैं, मेरे माता-पिता और मेरी छोटी बहन। मेरी छोटी बहन मेरी सबसे अच्छी साथी है। वह मुझसे डेढ़ साल छोटी है। वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ती है। वह बहुत प्यारी और नटखट है। हम दोनों हर रविवार को साइकिल चलाते हैं। मैं उसके साथ खेलती हूँ। वह सबसे अच्छी बहन है। मैं अपनी बहन से बहुत प्यार करती हूँ। हम दोनों क्रिकेट सीख रहें हैं और क्रिकेट खेलते भी हैं। मेरी बहन मेरी सबसे अच्छी दोस्त है।

- लास्या पल्ली
कक्षा 6 'बी' विभाग

मेरी सहेली इशानी

मेरी सहेली इशानी मेरे लिए बहुत ही अच्छी थी। मैनें उससे बहुत कुछ सीखा जैसे -जो है उसी के साथ खुश रहों क्योंकि जो आज है, वह कल नहीं रहेगा। वह मेरी बहुत अच्छी सहेली है। हम दोनों हर त्योहार साथ मनाते थे। पर अब वह बैंगलुरु में रहती है। वह चित्र कला में बहुत अच्छी है। वह अभी भी सप्ताह में हम दोनों के चित्र बनाके भेजती है। जब वह मुझे चित्र बनाके भेजती है, मुझे बहुत खुशी मिलती है। जब भी मैं बैंगलुरु जाती हूँ, उससे जरूर मिलती हूँ। मैं उसे बहुत याद करती हूँ। मेरी प्यारी सहेली इशानी।

- लिशा डी
कक्षा 6 'डी' विभाग

-रिधिमा शर्मा
कक्षा 6 'डी' विभाग

पाठशाला का पहला दिन

जब मैं इस पाठशाला में आई थी, तब कुछ समय तक मुझे कुछ समझ में नहीं आता था। मैं हमेशा डरी-सहमी रहती थी। मेरी मातृभाषा पंजाबी और हिन्दी है। कन्नडा मेरे लिए एक नया विषय था। कन्नडा कक्षा के समय मुझे कुछ समझ में नहीं आता था, लेकिन धीरे-धीरे करके मुझे कन्नडा समझ आने लगी। जब मैं इस पाठशाला में आई थी तब मैं पाँचवी कक्षा में पढ़ती थी। उस समय मैंने एक दोस्त बनाई जिसका नाम है खुशी। वह बहुत ही अच्छी है। उसने मुझे बहुत कुछ सिखाया। अब मुझे यह पाठशाला बहुत पसंद है क्योंकि अब मेरे बहुत सारे दोस्त बन गए हैं।

सर्दी का मौसम

सर्दी का मौसम साल का सबसे ठंडा मौसम है, जो दिसम्बर से शुरू होता है और मार्च में खत्म हो जाता है। मुझे सर्दी बहुत पसंद है, क्योंकि बर्फ़ गिरते समय वह बहुत ही खूबसूरत होती है। वह हर चीज़ को एक सफ़ेद कंबल की तरह ढक लेती है और एक मनोरम दृश्य बनाती है। बर्फ़ बारिश से भी बेहतर है, क्योंकि आप ज्यादा भीगते नहीं है। आप बर्फ़ में स्केटिंग या स्नोबॉल फेंकने जैसी गतिविधियाँ कर सकते हैं। सर्दी में गरम-गरम पकोडे खाने का एक अपना अलग ही मज़ा है, इसलिए मुझे सर्दी का मौसम बहुत अच्छा लगता है।

- चहेक डर्ला
कक्षा 6 'डी' विभाग

"कवि कहेगा ही क्या, यदि उसकी इकाई सब की इकाई बनकर अनेकता नहीं पा सकी और श्रोता सुनेंगे ही क्या, यदि उन सबकी विभिन्नताएँ कवि में एक नहीं हो सकीं।"

- महादेवी वर्मा

मेरा परिवार

मेरी माँ करती है मुझसे प्यार,
मेरे परिवार में है लोग चार।
पापा के लाड़ ने बिगाड़ा,
लेकिन उनकी डाँट ने मुझे सवाँरा।

मेरी बहन मुझ पर चीखे,
और कई बार मेरे काम से सीखे।
मेरा भाई करे मुझे परेशान,
जब कोई काम करवाना हो बुलाए मेहरबान-कदरदान।

मेरे दादा-दादी ने सुनाई कहानियाँ,
मेरी माँ गाए मेरे लिए लोरियाँ।
मेरे जैसा परिवार सब को मिले,
आपका परिवार भी फूल जैसे खिले।

- ज़ुनैरा फातिमा हुसैन
कक्षा 6 'बी' विभाग

मेरे पिता

सुबह की नर्म रोशनी में, वह उठते हैं,
हर एक कदम में मजबूती और अनदेखी छुपी रहती है।
उनके थके हाथ और खुशी से भरी आँखें,
हर नए दिन का स्वागत करती हैं।

उनकी हँसी एक मीठी धुन की तरह,
यादों में गूँजती है, हर पल पुरानी और नई,
उनकी नज़रों में गहरी समझ छिपी है,
हमें जीवन की पेंचीदा राहों पर मार्गदर्शन करती है।

खुशियों में, दुखों में, वह अटल खड़े रहते हैं,
कल के लिए आशा का प्रतीक बनकर मौन रहते हैं,
नायक वह हमारे किस्सों के नायक हैं,

हमारे दिलों के राजा
उनका प्यार हमेशा हमारे मन में बस जाएगा।

उस व्यक्ति को, जिसने हमें सब कुछ दिया,
हम सम्मानित करते हैं, हमारे अडिग स्तंभ को
चाहे वह रहे पास हो या दूर,
आप हमारे मार्गदर्शन, हमारे चमकते सितारे हैं।

- तानवी एम बी
कक्षा 6 'ए' विभाग

बारिश की फुहार

बारिश जब आ जाती है।
सुहाना सा मौसम छा जाता है,
छन-छन करती बारिश, जब आ जाती है।

तब-तब सूरज छिप जाता है,
तप-तप सूर्य की इस गरमी को
छन-छन बारिश शीतल कर जाती है।

आसमान में काले घने बादलों के बीच,
छन-छन बारिश ले आती है।
इन्द्रधनुष अपने सात रंगों के साथ,
ले आती है बच्चों के चेहरों पर मुस्कान।

-साची
कक्षा 6 'ए' विभाग

हिमायल की बेटियाँ

हिमालय हिमालय आप कहाँ गए?
आपके पिघलते हुए दिल कहाँ से आए?
कितनी बेटियाँ हैं आपके पास?
जिन पर रखें हैं आप उम्मीद और आस।
आपकी दो बेटियाँ कहाँ गईं आपको छोड़कर?
कहाँ गईं आपकी बेटियाँ आपका दिल तोड़कर?
क्यों बैठे हैं आप,
यूँ चुपचाप?
चेहरा है इतना सुंदर,
पता नहीं क्या छुपा है दिल के अंदर।

-आयुषी प्रमोद
कक्षा 7 'ए' विभाग

बिन पानी सब सून

कक्षा 6 और 7 के बच्चों द्वारा "बिन पानी सब सून" नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया। इस नाटक के माध्यम से मनुष्य को आने वाले समय में होने वाली पानी की समस्या से अवगत कराया गया। नाटक की शुरूआत रहिमदास जी के दोहे से की गई। जो इस प्रकार है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरे, मोती,मानुष,चून॥

रहीमदास जी एक अरसे पहले ही अपने दोहे के माध्यम से हमें सतर्क कर गए थे कि पानी को सहेज कर रखिए, क्योंकि बिना पानी के यह संसार सूना है। शायद उन्हें सैकड़ों वर्षों पहले ही इस बात का अंदाजा था कि इंसान पानी के मोल को कभी नहीं समझेगा और जब समझेगा, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

जल हमारे जीवन का मूल आधार है। यह हर एक प्राणी के लिए एक अनिवार्य है। बिना पानी के जीवन की कल्पना करना जीव के लिए असंभव है। हर एक जीव पानी की उपस्थिति के कारण मौजूद है। जल प्रकृति द्वारा दी गई एक अनमोल भेंट है। जिसका सम्मान करना चाहिए न कि इसका दुरूपयोग। प्राय: देखा गया है कि मनुष्य मुफ़्त में मिली वस्तु की अहमियत नहीं समझता है और ना ही वह उसकी कद्र करता है। यही कारण है कि आज पृथ्वी से जल तेजी से विलुप्त होता जा रहा है यानी कि दिनों-दिन पानी का संकट गहराता जा रहा है। पानी जितना मनुष्यों के लिए आवश्यक है उतना ही पेड़-पौधों के लिए भी हैं। जल के बिना पेड़-पौधों का विकसित होना भी संभव नहीं हैं। मनुष्य को जीवित रखने के लिए पेड़-पौधे को जीवित रखना बहुत ही आवश्यक है। जिसके लिए पृथ्वी में पानी का होना अति आवश्यक होता है। जल स्रोतों के संरक्षण से हम वनस्पतियों को सुरक्षित रख सकते है और वातावरण को भी संतुलित में रखा जा सकता है।

नाटक के माध्यम से पृथ्वी पर पेयजल की भयानक स्थिति को दर्शाया गया है। लोगों को पानी पीने के लिए नहीं मिल रहा है। ऐसे में लोग गंदा पानी पीने को मजबूर हैं। कुछ बरसों तक जल का अंधाधुंध दोहन ऐसे ही होता रहा तो पीने के लिए गंदा पानी भी नहीं बचेगा। जीवन को बचाने के लिए जल को बचाना होगा। जल संचय की तकनीकों को अपनाना होगा और जल संबंधी जागरूकता को बढ़ाना होगा। इसी संदेश के साथ नाटक का समापन हुआ।

- सुमन भट्ट
हिन्दी अध्यापिका

प्रकृति

पेड़ है बड़े-बड़े,
आसमान में तारे
नदी बहती हँसती है ,
फूलों की महक है प्यारी
चिड़िया गाए गाना,

सूरज देता है उजाला
बारिश आए रिमझिम,
धरती हरी-भरी प्यारी
प्रकृति का है जादू अद्भुत
आओ सब मिलकर इसे बचाए।

- कृष्णव सिंह
कक्षा 8 'बी' विभाग

हमारी धरती

एक ही है धरती हमारी,
पर बोज डालते हैं हम इस पर भारी।
चील उड़ता था बड़े आराम से,
अब गला घूँट रहा है धुँए से।

जहाँ होती थी बरसात,
अब सूखा पड़ा है दिन रात।
जो पेड़ हमें देते थे छाया,
वे कह रहे हैं-'इनसानों की क्या माया'।

वक्त आ गया है कुछ करने का,
वरना कहते रह जाएँगे कुछ ना हो सका।
हमें दिख रही है वह मरती,
हमारी धरती, हमारी धरती।

- अर्शबीर सिंह
कक्षा 8 'डी' विभाग

दोस्ती

रात हुई नहीं दिन का ख्याल क्यों?
सूरज डला नहीं चाँद का इंतज़ार क्यों?
जो हुआ नहीं है अपने समूह पर होगा
जब कोई आता है एक दिन उसे भी जाना ही होगा।

सूरज कहता है मेरी रोशनी से इनसान
चिढ़ते हैं, चाँद कहता है
तेरी वजह से भी किसी के फूल खिलते हैं।

सूरज मुस्कुराकर कहा
अगर तू न होता मैं किधर समाता
तेरी रोशनी न होती तो
रह जाता मैं एक तारा
दोनों एक दूसरे के बगैर अधूरे
वैसी है हमारी दोस्ती, अनकही नज़ारों जैसी।

तू मेरे लिए चाँद नहीं
चाँद तुम्हारा टुकड़ा है,
जब चाँद भी टूट जाए
ये अनकही दोस्ती सलामत है।

- दिशा अर्जुन
कक्षा 8 'डी' विभाग

स्वच्छ पानी का महत्व

पानी है एक खज़ाना
हमारे चारों ओर हमेशा
मूल्यवान और शुद्ध
हमारी ज़रूरतों को पूरा करता।

फिर भी हम फेंकते हैं कचरा
नदियों और समुद्रों में,
गंदगी से भर देते हैं
आसानी से बेफ़िक्री से।

यह लाता है समस्याएँ,
पानी की गंदगी की किल्लत,
इसलिए हमें अब काम करना चाहिए।
सही दिशा में रखना चाहिए।

पुन: प्रयोग करें और फेंके
कचरा सही जगह पर,
हमारे जल स्त्रोतों की रक्षा करें
एक सजग प्रयास से।

क्योंकि पानी है हमारी ज़िंदगी की धुरी,
हर पहलू में आवश्यक,
आइए, इस खज़ाने की रक्षा करें
प्रदूषण और संघर्ष को खत्म करें।

- जस्मिता रेड्डी के
कक्षा 8 'बी' विभाग

शिक्षकों का महत्व

शिक्षकों का महत्व हमारे जीवन में बहुत अधिक होता है। वे हमारे परिवार के सदस्य की तरह होते हैं। वे हमारे जीवन को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक हमारे लिए ईश्वर का विशेष वरदान है। वे ही है जो एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण करते हैं। शिक्षक हमें सही और गलत के बीच का अंतर सिखाते हैं। वे हमें जीवन में सही रास्ते पर चलने में मदद करते हैं, जिससे हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। इस शिक्षक दिवस पर मैं अपने शिक्षकों को धन्यवाद देना चाहती हूँ। मेरे जीवन में मुझे अपने माता-पिता और दोस्त जैसे शिक्षक मिले हैं, मैं बहुत खुश किस्मत हूँ। भगवान उन्हें सदा खुश रखें।

- अवंतिका एम
कक्षा 8 'ए' विभाग

विराट कोहली भारतीय क्रिकेट का सितारा

विराट कोहली का नाम आज भारतीय क्रिकेट के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जा चुका है। उनके खेल का जुनून, आक्रामकता और निरंतरता ने उन्हें न केवल भारत बल्कि विश्व क्रिकेट में भी एक अद्वितीय स्थान दिलाया है। आइए,विराट कोहली की यात्रा पर एक नज़र डालते हैं, जो उन्हें एक साधारण खिलाड़ी से लेकर "किंग कोहली" बनने तक ले गई।

प्रारंभिक जीवन और करियर की शुरुआत:

विराट कोहली का जन्म पाँच नवंबर 1988 को दिल्ली में हुआ था। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही क्रिकेट में रुचि दिखा दी थी। उनके माता-पिता ने उनकी इस रुचि को पहचाना और उन्हें पेशेवर प्रशिक्षण दिलाने के लिए वेस्ट दिल्ली क्रिकेट यात्रा की शुरुआत हुई। विराट ने 2008 में भारतीय अंडर-19 टीम में नेतृत्व किया और टीम को विश्व कप जिताया। उनकी इस शानदार प्रदर्शन ने उन्हें भारतीय क्रिकेट टीम में शामिल होने का मौका दिया। 2008 में ही उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ़ अपना वनडे डेब्यू किया। धीरे-धीरे विराट ने अपनी जगह पक्का कर ली और अपने बल्लेबाज़ी कौशल से सभी का ध्यान खींचा।

कप्तानी की सफलताएँ:

विराट कोहली को 2013 में महेंद्र सिंह धोनी के बाद भारतीय टीम का उप कप्तान बनाया गया। उनके नेतृत्व में भारतीय टीम ने कई ऐतिहासिक जीत भारतीय टेस्ट टीम की कप्तानी संभाली। उनके नेतृत्व में भारत ने लगातार 42 महीने तक टेस्ट रेंकिग में शीर्ष स्थान बनाए रखा, जो किसी भी टीम के लिए बड़ी कीर्तिमान है। वनडे और टी20 में भी विराट की कप्तानी में भारत ने कई महत्वपूर्ण श्रृंखलाएँ जीती। उनकी कप्तानी का सबसे बड़ा गुण था उनका अनुशासन, दृढ़ निश्चय और जीत के प्रति उनका अटूट विश्वास। विराट के नेतृत्व में भारतीय टीम ने 2018-19 में आस्ट्रेलिया की धरती पर पहली बार टेस्ट जीता।

विराट की बल्लेबाज़ी:

विराट कोहली का नाम भारतीय क्रिकेट में उनकी अद्वितीय बल्लेबाज़ी और अटूट समर्पण के लिए जाना जाता है। उनकी तकनीक, फिटनेस और खेल को पढ़ने की क्षमता उन्हें दुनिया के बेहतरीन बल्लेबाजों में शामिल करती हैं। अंतर्राष्ट्रीय करियर 75 से अधिक शतक है और सबसे तेज़ 8,000 से 11,000 रन बनाने का रिकार्ड है और उन्हें "चेज़ मास्टर" भी कहा जाता है। 2017 में विराट ने अभिनेत्री अनुष्का शर्मा से शादी की और विरुषका के नाम से जाने जाते हैं। विराट का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा समान है और उनके खेल की इच्छा और फिटनेस भी प्रेरित करती है।

- आर्यव डर्ला
कक्षा 8 'ए' विभाग

खट्टी-मीठी यादें

मेरी चाची की शादी विजयपुर में गर्मियों की छुट्टियों के दौरान तय की गई थी, जहाँ तापमान आमतौर पर 40 डिग्री के आसपास पहुँच जाएगा। मेरी बहन और मैं बहुत उत्साहित थीं और खुशी से यात्रा की योजना बनाई। मेरे पिता ने हम सभी के लिए ट्रेन टिकट बुक किए। मैसूर से विजयपुर तक की यात्रा 17 घंटे की थी। हम दोपहर में ट्रेन में सवार हुए और अगले दिन सुबह 7 बजे तक वहाँ पहुँचने वाले थे। कुछ मुद्दों के कारण ट्रेन लेट हो गई और हम लगभग 3-4 घंटे तक बीच में फसे रहे। हम उस गर्मी को सहन नहीं कर पा रहे थे और इतनी देर तक ट्रेन में बैठे रहने से बहुत ऊब गए थे और सारा उत्साह खत्म हो गया था। आखिरकार ट्रेन चलने लगी और हमें राहत की साँस मिली। दो घंटे का सफर बाकी था और हम आखिरकार दोपहर तक कार्यक्रम स्थल पर पहुँच गए, तब तक बहुत सारे कार्यक्रम हो गए थे लेकिन हम संगीत कार्यक्रम में भाग लेने में सक्षम थे, जहाँ मेरी छोटी बहन और मैंने कुछ गाने गाए और अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ नृत्य किया और कार्यक्रम का पूरा आनंद लिया। अंत में शादी के उत्सव ने हमें भारी गर्मी व्यस्त यात्रा को भुला दिया।

- दीक्षा गुर्गी
कक्षा 8 'डी' विभाग

स्वदेशी मेला: हस्तशिल्प कला प्रदर्शनी

हमारे विद्यालय में 8 जुलाई को आयोजित स्वदेशी मेला एक अद्वितीय और शानदार रहा। इस मेले में विद्यार्थियों ने अपनी सृजनात्मकता और कौशल का प्रदर्शन किया। स्वदेशी मेला का मुख्य उद्देश्य हमारे पारंपरिक हस्तशिल्प और हाथ से बनी वस्तुओं के प्रति जागरूकता फैलाना था। इस कार्यक्रम में छात्रों ने अपनी कला और सांस्कृतिक ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए अनेक रूपांतरण की अद्वितीयता दिखाई।

प्रदर्शनी की मुख्य विशेषताएँ:

इस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार की हस्तनिर्मित वस्तुएँ तैयार की और प्रदर्शित की, जैसे कि: क्विलिंग,मधुबनी कला, मंडला कला, वारली कला, दीया डिज़ाइन, टाई और डाई, शंख डिज़ाइन, चूड़ी डिज़ाइन, टेरेकोटा पेंटिंग। पारंपरिक प्रदर्शन के अतिरिक्त छात्रों ने निम्नलिखित पारंपरिक वस्तुओं का प्रदर्शन भी किया। बांस की वस्तुएँ, मैसूर सिल्क साड़ियाँ, खादी के वस्तुएँ, चन्नपटना खिलौने, लाख की चूड़ियाँ, लकड़ी की नक्काशी, क्रोशिया कार्य।

जानकारीपूर्ण प्रस्तुतियाँ:

छात्रों ने न केवल अपने हस्तनिर्मित वस्तुओं को प्रदर्शित किया, बल्कि हिंदी में उनकी महत्ता, इतिहास और सांस्कृतिक महत्व पर भी चर्चा की। यह उन्हें हस्तशिल्प की महत्वपूर्णता को समझने में मदद करता है और हमारी संस्कृति के समृद्ध विरासत को साझा करता है।

विस्तारित गतिविधि: लाख की चूड़ियाँ पाठ की एक विस्तारित गतिविधि:

इस प्रदर्शनी ने "लाख की चूड़ियाँ" पाठ की एक विस्तारित गतिविधि के रूप में कार्य किया। यहाँ पर हमारे छात्रों ने विशेष प्रकार के हस्तशिल्प के महत्व और इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान की, जिससे उन्होंने न केवल अपनी कला की प्रतिभा को दिखाया बल्कि अन्य छात्रों को भी इसे समझने में मदद मिली।

हस्तशिल्प कला के इस आयोजन ने विद्यार्थियों को न केवल अपनी सृजनात्मकता को निखारने का अवसर दिया, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति और परंपरा से भी जोड़ा। इस मेले में विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना की।

स्वदेशी मेला का उद्देश्य विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता और स्वदेशी उत्पादों के महत्व को समझाना था। हस्तशिल्प कला के माध्यम से बच्चों में न केवल कलात्मक गुणों का विकास हुआ, बल्कि उनमें धैर्य और परिश्रम की भावना भी जागृत हुई।

निष्कर्ष:

स्वदेशी मेला हस्त शिल्प प्रदर्शनी एक सशक्त और समृद्ध आयोजन था, जो हमारी राष्ट्रीय हस्तशिल्प की समृद्ध विरासत को समर्थन और बढ़ावा देता है। यह हमारे छात्रों की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करता है और उनकी रचनात्मक प्रतिभाओं को समर्थन देने का माध्यम बनता है।

इस सफल आयोजन के लिए विद्यालय के सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई। आशा है कि आने वाले वर्षों में भी हम इस प्रकार के आयोजनों के माध्यम से अपनी संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करते रहेंगे।

बचपन के दोस्त

यादों का पिटारा खुल गया,
अतीत में झाँकने का झरोखा मिल गया।
बचपन के दोस्तों को याद करने का मौका मिल गया,
यादों का पिटारा खुल गया।

आज बचपन की तस्वीरें निहारने लगी,
तो मुझे आप लोगों की याद आने लगी।
जब भी दोस्तों की ज़िक्र करती हूँ,
तब आप लोगों को ही याद करती हूँ।

हे दोस्तों,
आप हमेशा हँसते रहें
जीवन में आगे बढ़ते रहें
मौका मिले तो मिलने की कोशिश करते रहें
खट्टी मीठी यादें बस चलती रहें ।
दुआ करते हैं आप सदा खुश रहें
हमारी ये दोस्ती सलामत रहें।

मैं हूँ धरती

मैं हूँ धरती।
हे! मानव,
मैंने तुझे क्या कुछ नहीं दिया।
पर तूने क्या किया?
अपनी स्वार्थपरता में आकर
कर रहे हो मेरा नाश।
सुधर जाओ, वरना होगा तेरा विनाश।
मुझको तुम बंजर ना बनाओ ।
हर जगह कूड़ा-कचरा ना फैलाओ।
जब करोगे मेरी सुरक्षा।
तभी होगी तुम्हारी रक्षा॥

"हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से
बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है।" - महात्मा गांधी

आत्मविश्वास : सफलता की कुंजी

आत्मविश्वास एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह वह आंतरिक शक्ति है जो हमें चुनौतियों का सामना करने, अपने लक्ष्य प्राप्त करने, और कठिनाइयों को पार करने में सक्षम बनाती है। आत्मविश्वास न केवल हमारे व्यक्तित्व को निखारता है, बल्कि हमारे कार्यों में भी उत्कृष्टता लाने में सहायक होता है।

विद्यालय जीवन में आत्मविश्वास का विशेष महत्व है। यह विद्यार्थियों को न केवल पढ़ाई में, बल्कि अन्य गतिविधियों में भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करता है। आत्मविश्वासी विद्यार्थी कक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, नए विचार प्रस्तुत करते हैं, और कठिन विषयों को भी साहस के साथ समझने का प्रयास करते हैं।

आत्मविश्वास का विकास एक लंबी प्रक्रिया है जिसे नियमित अभ्यास और सकारात्मक सोच से प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए हमें खुद पर विश्वास करना, अपनी क्षमताओं को पहचानना, और असफलताओं से निराश होने की बजाय उनसे सीखना आवश्यक है। आत्मविश्वास हमें यह समझने में मदद करता है कि असफलताएँ जीवन का हिस्सा हैं और वे हमें मजबूत बनाती हैं।

अभिभावकों और शिक्षकों का भी आत्मविश्वास के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उनका प्रोत्साहन और समर्थन बच्चों को अपने भीतर के डर को दूर करने और अपनी क्षमता को पहचानने में मदद करता है। इसलिए, आत्मविश्वास को अपने जीवन का हिस्सा बनाइए। आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति न केवल अपने लिए, बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनता है। आत्मविश्वास ही वह चाबी है जो सफलता के द्वार खोलती है।

आइए, हम सभी अपने जीवन में आत्मविश्वास को मजबूत बनाएँ और जीवन की हर चुनौती का सामना डटकर करें।

- सुनिता बी एल
हिंदी अध्यापिका

प्रयास करो तमाशा मत देखो

एक गाँव में आग लग गई। आग बढ़ती जा रही थी और गाँव वाले अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे। एक चिड़िया ने यह दृश्य देखा और तुरंत अपनी चोंच में पानी भरकर आग बुझाने का प्रयास करने लगी। वह बार-बार अपनी चोंच में पानी लाती और आग पर डालती। जब गाँव वालों ने चिड़िया को आग पर पानी डालते देखा, तो उनमें भी जोश आ गया। वे बोले अगर ये चिड़िया प्रयास कर रही है, तो हम क्यों नहीं कर सकते? सब ने मिलकर प्रयास किया और अंततः आग बुझा दी। यह सब एक कौआ देख रहा था। उसने चिड़िया से कहा, "तेरे पानी डालेने से कुछ होना तो था नहीं, फिर तू ये क्यों कर रही थी?" चिड़िया बोली, "मेरे पानी डालने से कुछ हुआ या नहीं लेकिन मुझे गर्व है कि जब भी इस आग की बात होगी तो मेरी गिनती आग बुझाने वालों में होगी। तेरी तरह तमाशा देखने वालों में से नहीं।"

- स्तुति ए जैन
कक्षा 10 'डी' विभाग

परिवार

अयं निजः परो वेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

"दुनिया एक परिवार है।" यह विचार आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह वैश्विक दृष्टिकोण को महत्त्व देता है और दूसरों की भलाई के बारे में सोचने, वैश्विक एकता और जिम्मेदारी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करता है खासकर जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, शांति और भिन्नताओं के प्रति सहनशीलता जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने में। इस परंपरा का पालन हमारे विद्यालय में लंबे समय से किया जा रहा है। एक गुरु और शिष्य के संबंध कैसे होने चाहिए, इसका उदाहरण हमारे विद्यालय ने स्थापित किया है।

- नचिकेत डी
कक्षा 9'ई' विभाग

स्नोई

जब मैं आठ या नौ साल की थी, तब हमारे घर में एक कुत्ता था। उसका नाम 'स्नोई' था। वह एक सफ़ेद रंग का लैब्राडॉर था। उसकी नाक हमेशा गीली रहती थी। गुस्सा आने पर वह ज़िद करता था। वह अच्छे से खाता-पीता था। हम सब उसे बहुत प्यार करते थे।

एक दिन मैं और नाना जी स्नोई को घुमाने ले जा रहे थे। हम तीनों बड़े आराम से धीरे-धीरे चल रहे थे। सामने से आते हुए एक कुत्ते को स्नोई ने देख लिया और वह उसके पीछे भागने का प्रयास करने लगा।

इसी प्रयास में नाना जी के हाथ से मेरा हाथ छूट गया और मैं गिर पड़ी। स्नोई को रोकने के प्रयास में और मुझे बचाने में मेरे नाना जी भी गिर पड़े। मुझे तो थोड़ी ही चोट आई परंतु नाना जी का हाथ टूट गया। हम दोनों को गिरा देखकर स्नोई दुम हिलाता हुआ हमारे इर्द-गिर्द घूमने लगा।, मानो उसे अपनी गलती का एहसाह हो गया हो।

- अमृता बिलगिरी प्रशांत
कक्षा 9'डी' विभाग

बूढ़ी काकी – कहानी समीक्षा

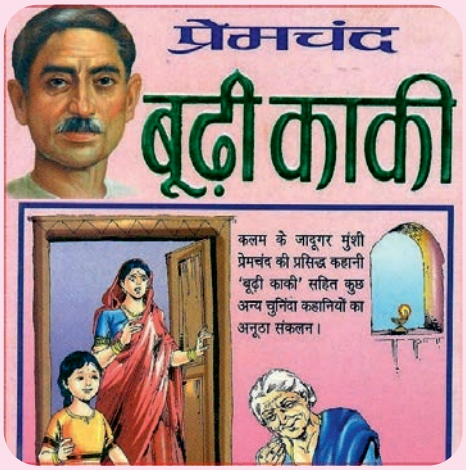

वक्त के साथ बहुत कुछ बदल गया है लेकिन मुंशी प्रेमचंद की कहानी बूढ़ी काकी आज भी प्रासंगिक है। जब भी बुजुर्गों के विषय में चर्चा होती है, तब प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार मुंशी प्रेमचंद की मार्मिक कहानी बूढ़ी काकी स्मरण हो आती है। अकसर बुजुर्ग को लोग नसीहत देते हैं, उनकी उपेक्षा करते हैं और उनका तिरस्कार करते हैं। मुंशी प्रेमचंद की कहानी बूढ़ी काकी आज भी हमारे सामने आईने की तरह है।

- ईशान मिश्रा
कक्षा 10'डी' विभाग

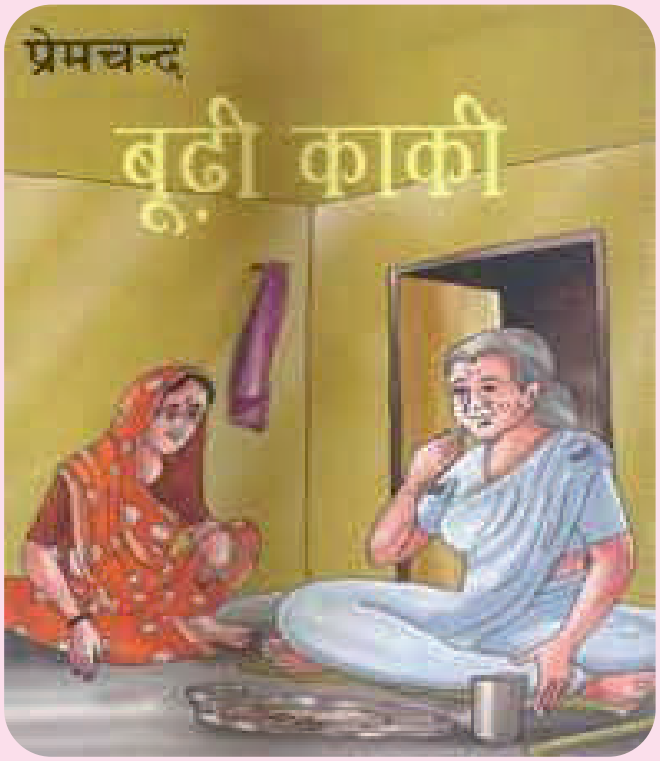

'बूढ़ी काकी" कहानी का लेखक है 'प्रेमचंद'। काकी एक वृद्धा है जिनका बेटा छोटी उम्र में ही चल बसा था। अब काकी के पास अपने सिर्फ उनका भतीजा है। काकी ने अपनी सारी जायदात अपने भतीजे को दे दी थी। भतीजा और उसकी बीवी काकी को ठीक से खाना-पानी न देते बस एक कोठरी में रखते। भोज के दिन जब काकी बाहर आई, तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ और भतीजे ने काकी को घसीट कर कोठरी में फेंक दिया। काकी पूरी रात भूखी रही। अंत में काकी को कचरे के ढेर के पास खाना खाते देख रूपा (भतीजे की पत्नी) को अपनी गलती का एहसास हुआ।

प्रेमचंद हमें यह बताना चाह रहे हैं कि हमें अपने बड़ों की सेवा करनी चाहिए। वह हमसे प्यार करते हैं इसलिए अपना सबकुछ हमारे नाम कर देते हैं। हमें उनकी दौलत को नहीं, उनके प्यार को देखना चाहिए। वह अपने आखिरी पलों में हमारे साथ रहकर हमारे प्यार पाना चाहते हैं। जिसने हमें पाल-पोसकर बड़ा किया और काबिल बनाया, हमें भी उनके कठिन समय में उनकी मदद करनी चाहिए। उनसे प्यार से बात करनी चाहिए, लाड़-दुलार करना चाहिए। जिस तरह हमारे बचपन में वह प्यार करते थे, उसी तरह उनके बुढ़ापे में उन्हें अपने बच्चे की तरह संभालना चाहिए।

- श्रेया जैन
कक्षा 10'ई' विभाग

बिल्ली के साथ जीवन

एक बिल्ली को घर में लाना एक खूबसूरत अनुभव है। बिल्लियाँ अपने मधुर स्वभाव, शरारती हरकतों और प्यारे व्यव्यहार से घर को जीवित बना देती हैं। वे न केवल हमारे घरों के लिए बल्कि हमारे दिलों में भी एक खास जगह बना लेती हैं। बिल्लियाँ स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होती हैं, लेकिन उनके पास प्यारी नाजुकता होती है, जिनकी कोमल गूँज हमारे जीवन में खुशियाँ लाती हैं। लेकिन बिल्ली पालन हमारे लिए कुछ चुनौतियाँ भी लाती हैं। उनकी स्वतंत्रता के कारण उन्हें प्रशिक्षित करना आसान नहीं होता। उनका पंसदीदा शौक, फर्नीचर पर खरोंच लगाना या घर के कोने में छिपना, कभी-कभी हमारी परेशानी का कारण बन सकता है। बिल्ली की देखभाल में उनका खाना-पीना, सफ़ाई और नियमित स्वास्थ्य जाँच शामिल होती है। फिर भी बिल्लियाँ प्यार और वफादारी का प्रतीक हैं। उनके साथ बिताया गया समय शांती और खुशी जो देती है बिलकुल अलग है। वे आपकी भावनाओं को समझती हैं और आपके दुख में साथ देती है। बिल्ली की संगत से आपकी दिनचर्या में एक खूबसूरत बदलाव आता है। अंत में, बिल्ली पालना एक साहसिक कार्य है। यह एक ऐसा रिश्ता है जो आपकी जिंदगी को खुशियों से भर देता है। बिल्लियाँ अपने प्यार मस्ती और कुछ झंझटों से घर में एक खास जगह बना लेती हैं, जहाँ जीवन के हर पल को शानदार ढंग से जीना संभव होता है।

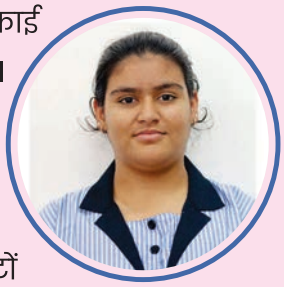

- जाज़नीन
कक्षा 9'सी' विभाग

मेरा डैनियल

फल और सब्जियाँ,
बिस्कुट और चॉकलेट,
खाना है उसे पसंद।
लुका-छिपी और झूला झूलने में
आता है उसे बड़ा मज़ा।
बातें और मस्ती करना,
शुरू हो जाता है जब हम सुप्त।
एकाएक काट कर हो जाता है गायब,
जब डाँट पड़े तो, वापसी डाँट आए,
परदों पर चढ़कर नीचे निहारता है।
उसे छोड़ चले तो, खाना बंद,
हम खाते तो वो खाता,
हम घूमे तो वो घूमे,
और माँगने पर एक चुंबन देता है।

- एंजल हन्ना डिसूज़ा
कक्षा 9 'ई' विभाग

मेरा पालतू

मैं वास्तव में अपने स्वयं के पालतू जानवर रखना चाहती थी, लेकिन मुझे इसकी अनुमति नहीं थी। जब मेरी माँ मेरी उम्र की थी तब उन्हें इसकी अनुमति थी। उनके पास गिलहरियों से लेकर कुत्तों, पक्षियों वगैरह तक सभी प्रकार के पालतू जानवर थे। तब उनका रख रखवाली करना बहुत कठिन था क्योंकि वे उनकी हर जगह को मानते थे जहाँ वे जो चाहें कर सकते थे। वे बहुत प्यारे होते थे और मनुष्यों के लिए वास्तव में अच्छे मित्र होते थे लेकिन जब वे मर जाते थे तो ऐसा लगता था कि आप अपने परिवार के किसी सदस्य को खो रहे हैं। वे बहुत वफादार होते थे और लोगों के बहुत अच्छे मित्र होते थे। यदि आप पालतू जानवर रखना चाहते हैं तो आपके पास उनकी पूरी तरह से देखभाल करने की मानसिकता होनी चाहिए, जैसे कि वे आपके परिवार के सदस्य हैं। वास्तव में घर में जानवरों को रखना अच्छी बात है। मैं वास्तव में उनसे बहुत प्यार करती हूँ लेकिन दुर्भाग्य से मैं उन्हें नहीं रख सकती , हालाँकि मैं चाहती हूँ कि मेरे पास ऐसा हो सके।

- अनघा जोशी
कक्षा 9 'ई' विभाग

हिंदी और हिंदी दिवस

हिंदी विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राज भाषा है। केंद्रीय स्तर पर भारत में सह-आधिकारिक भाषा अंग्रेज़ी है। हिंदी के मानकीकरण रूप को मानक हिंदी कहा जाता है। मानक हिंदी में संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी-फारसी के शब्द कम हैं। हिंदी संविधान रूप के अनुसार भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी भारत की राजभाषा है क्योंकि भारत के संविधान में राष्ट्रभाषा का कहीं उल्लेख या चर्चा नहीं है। हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है। 57% भारतीय जनसंख्या हिंदी जानती है। हिंदी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को मनाया जाता है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया कि हिंदी केंद्र सरकार की अधिकारिक भाषा होगी क्योंकि भारत में अधिकतर क्षेत्रों में ज्यादातर हिंदी भाषा बोली जाती थी, इसलिए हिंदी को प्रत्येक क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए वर्ष 1953 से पूरे भारत में 14 सितंबर को प्रातिवर्ष 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविंददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर व्यौहार राजेंद्र सिंह ने अथक प्रयास किए।

- प्रियांशी जैन
कक्षा 10 'ई' विभाग

संविधान

भारत का संविधान 09 दिसंबर 1947 से 26 नवंबर 1949 के बीच संविधान सभा के द्वारा रचित किया गया। यह 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ इसलिए प्रतिवर्ष 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाया जाता है। अब तक संविधान के मूल रूप में 365 विधि, 25 भाग 12 अनुच्छेद और 118 सुधार को सम्मिलित यह संविधान किसी भी देश के लिखित संविधान से विस्तृत है। हमारा संविधान सर्वोच्च कानून है जो सरकारी की व्यवस्था को रचता है तथा मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों से अवगत कराता है। संविधान में शक्तियों का विभाजन, नागरिक संरक्षण जैसे विषय आते हैं। संविधान लोगों के स्वभाव और अच्छे नागरिकों को बरकरार रखती है। संविधान

में जीवन के ज़रूरी मूल्यबद्ध सिद्धांत भी मौजूद है। यह शक्तियों का दुरुपयोग करने पर रोक लगाती है। अंत में कह सकते हैं कि संविधान एक सर्वोच्च कानून है, जिसका हमें पालन करना चाहिए।

- शंशांक बी एन
कक्षा 9 'एफ' विभाग

मेरा कुत्ता

कुत्ता एक ऐसा जानवर है जो हमेशा मालिक के साथ वफादार होता है। कुत्ते के साथ मेरी एक छोटी सी कहानी है। एक बार माँ एक नन्हा सा पिल्ला घर पर ले आई। हमने उसे लाड़ प्यार से पाला। वह

बहुत शरारत करता था, घर की चीज़ों को काटने लगा। सोफ़े को फाड़ दिया। हमने उसे बहुत समझाने की कोशिश की लेकिन वह सुनने को तैयार नहीं था इसलिए मेरी माँ जाकर उसको कहीं छोड़ दिया। उस दिन हम बहुत दुखी थे और आज भी हम उसको याद करते हैं।

- प्रत्यूष एम
कक्षा 9 'ई' विभाग

मेरा तोता

मेरे पास एक प्यारा नटखट तोता था जो मुझे हमेशा खुश रखता था। वह मेरे साथ खेलता कूदता रहता था। जब भी मैं कुछ काम करता था तभी वह मेरे पास आकर मेरे सामने बैठ जाता था। वह चाहता कि मैं उसके साथ हमेशा के लिए रहूँ। मैं उसके साथ खुशी से रहता था।

मैंने बचपन से उसे पाला था। उसकी माँ जब मर गयी थी, उसी समय मुझे ऐसा लगा कि उसको किसी न किसी की ज़रूरत है। मैंने उसी समय सोच लिया था कि मैं उसे पालूँगा। तभी से मैं उसे पालन करना शुरू किया। जब भी वह मेरे पास आता था। मैं उसे देखकर खुश हो जाता था। मुझे हमेशा

उसकी याद आती है। वह मुझे बहुत सारी खुशी देता था। लेकिन हर किसी के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब हम इन्सान टूट जाते हैं। एक दिन मेरे तोते को मुझे छोड़कर जाना पड़ा। आज भी मुझे उसकी याद आती है।

- रुद्रा रित्विक वसिष्ठा
कक्षा 9 'एफ' विभाग

ईदगाह – कहानी समीक्षा

यह कहानी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई है। इस कहानी के ज़रिये प्रेमचंद जी छात्रों में त्याग, सद्भाव, विवेक जैसे उत्तम गुणों का विकास करना चाहते हैं। साथ ही बड़े बुजुर्गों के प्रति श्रद्धा व आदर की भावना रखने की बात पर ज़ोर देते हैं। हामिद पाँच साल का लड़का है। उसके माँ-बाप चल बसे हैं। वह अपनी बूढ़ी दादी अमीना की परवरिश में रहता है। हामिद के पैरों में जूते तक नहीं है। आज ईद का दिन है। महमद, मोहसिन, नूर, शम्मी इनके दोस्त हैं। सब बच्चे अपने पिता के साथ ईदगाह जानेवाले हैं। अमीना डर रही है कि अकेले हामिद को कैसे भेजे। हामिद के धीरज बाँधने पर वह उसे भेजने को राज़ी होती है। जाते वक्त हामिद को तीन पैसे देती है। वह ईदगाह पैदल जाता है। वहाँ नमाज़ के बाद सब बच्चे खिलौने और मिठाइयाँ खरीदकर खुश रहते हैं। हामिद तो खिलौनों को ललचायी आँखों से देखता है पर चुप रहता है। बाद में लोहे के दुकान में जाता है। वहाँ अनेक चीज़ों के साथ चिमटे भी रखे हैं। चिमटा देखकर हामिद को ख्याल आता है कि बूढ़ी दादी अमीना के पास चिमटा नहीं है इसलिए तवे पर रोटियाँ उतारते हुए उसके हाथ जल जाते थे। चिमटा ले जाकर दादी को देगा तो वह बहुत प्रसन्न होगी और उसकी उंगलियाँ भी नहीं जलेगी। ऐसा सोचकर दुकानदार को तीन पैसे देकर वह चिमटा खरीदता है। सब दोस्त उसका मज़ाक उड़ाते हैं पर हामिद तो इसकी परवाह नहीं करता। घर लौटकर दादी को चिमटा दिया तो दादी नाराज़ हो गई। मगर हामिद कहता है कि तुम्हारी उंगलियाँ तवे पर जल जाती थीं, इसलिए मैं इसे ले आया, कहकर समझाता है। उसके कहने पर अमीना का क्रोध तुरंत रोने में बदल गया। हामिद के दिल के त्याग , विवेक और गुण देखकर उसका मन चकरा जाता है। हामिद को अनेक दुआएँ देती हैं और खुशी के आँसू आँखों से बहने लगते हैं। आजकल ऐसे बच्चे जो अपने दादा-दादी का सम्मान करते हैं वे ढूँढने पर भी नहीं मिलते। यह कहानी हमें अनेक सीख देती है पर अब वह हम पर निर्भर है कि हम उसे अपने जीवन में अपनायेंगे या नहीं। हमें अपने माता-पिता और साथ में दादा-दादी को महत्व देना सीखना चाहिए।

- प्रेक्षा डर्ला
कक्षा 10'ई' विभाग

इन्सानों का मुकाबाला- कहानी समीक्षा

इन्सानों का मुकाबला प्रेमचंद जी की अद्वितीय कहानियों में से एक है। जो मनुष्य के अंतर्मन गहराई से छूती है। यह कहानी एक साधारण गाँव के दो बच्चों के बीच होते हुए प्रेम और विश्वास की अनूठी कहानी को दर्शाती है। कहानी में एक गरीब लड़का रामजन और उसका मित्र श्याम समुद्र की बस्ती में रहते हैं। रामजन जो उनके पिता के मरने के बाद अकेला हो जाता है और उसके मित्र श्याम ने अपनी मित्रता को आगे बढ़ाने के लिए एक दूसरे के साथ अनेक चुनौतियों का सामना करते हैं। कहानी में दोनों बच्चों के बीच गहरी और स्थायी दोस्ती बनती है, जो उनके सामाजिक स्थान के बावजूद मज़बूत होती है। रामजन की बुद्धिमत्ता और श्याम की निष्ठा की सहायता से, दोनों अपने जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं।

"इन्सानों का मुकाबला" एक ऐसी कहानी है जो हमें सिखाती है कि सच्चे मित्र का महत्व क्या होता है और कैसे हर मुश्किल में साथ देना चाहिए। प्रेमचंद जी इस कहानी के माध्यम से सामाजिक और मानवीय मूल्यों को उजागर करते हैं और हमें यह बताते हैं कि आपसी संबंध कितना महत्वपूर्ण होता है।

- फरहान अख्तर
कक्षा 10'ई' विभाग

नीलकंठ - कहानी समीक्षा

नीलकंठ महादेवी वर्मा की प्रसिद्ध रेखाचित्रों में से एक है। नीलकंठ कहानी द्वारा लेखिका हमें उनके पालतू पशु-पक्षियों के साथ उनके रिश्ते को दिखाती हैं। इस कहानी में लेखिका बताती हैं कि वह कैसे अपने पालतू मोर से मिलती हैं और अपने दो मोरनी के बच्चों को अपने दूसरे पशु-पक्षियों के साथ पालती हैं। उनके सारे पशु पक्षी एक दूसरे से मिल-जुलकर रहते हैं। मोर को लेखिका 'नीलकंठ' नाम से पुकारती हैं और मोरनी को 'राधा' नाम से। नीलकंठ और राधा के प्यार के बीच में 'कुब्जा' आ जाती है और बाद में नीलकंठ राधा से अलग हो कर मर जाता है। इस कहानी से हम जान सकते हैं कि प्यार की कोई सीमा नहीं होती। पशु पक्षी भी आपस में प्यार करते हैं और उनमें भी भावनाएँ होती हैं।

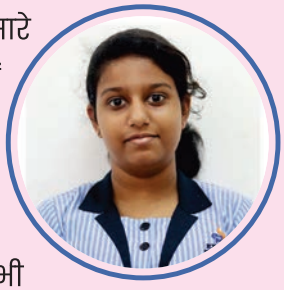

- नेहा सुबीश
कक्षा 9 'डी' विभाग

नीलकंठ यह संस्मरण महादेवी वर्मा द्वारा रचित है। महादेवी वर्मा पशु-पक्षियों से अत्यंत प्रेम करती थीं इसलिए उन्होंने पशु-पक्षियों पर बहुत सारे संस्मरण लिखे हैं। नीलकंठ महादेवी वर्मा का पालतू मोर था। महादेवी वर्मा अपने साथ दो मोरनी के बच्चे ले आती है। मोर का नाम नीलकंठ रखती है और मोरनी का नाम राधा। नीलकंठ स्वभाव से से स्नेही, निडर और साहसी है। अपने स्वभाव के कारण वह लेखिका का प्रिय बन जाता है। परंतु कुब्जा मोरनी के आ जाने से नीलकंठ को अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ता है। इस रचना में मनुष्य की तरह पक्षियों के आपसी सुंदर प्रेम का उदाहरण मिलता है। महादेवी वर्मा और नीलकंठ का बंधन प्रकृति के सामंजस्य और सुंदरता का प्रतीक है, जहाँ एक इन्सान और एक पक्षी अपने मतभेदों के बावजूद एक गहरा संबंध साझा कर सकते हैं। लेखिका के जीवन में नीलकंठ जैसे अन्य जानवरों के प्रति मातृ प्रेम दर्शाया गया है। महादेवी वर्मा पशु क्रूरता के खिलाफ़ थी इसलिए वह अपने पालतू जानवरों पर कई कहानियाँ व रेखाचित्र लिखें जिन्होंने अप्रत्यशित रूप से उनके जीवन में कदम रखा।

- अर्जुन आर नायर
कक्षा 9 'ई' विभाग

संपादक की कलम से

"भाषा वह जो मन को छू जाए,
संवेदनाओं के पुल बाँध जाए,
दिल के गहरे कोनों में उतर जाए,
और हर द्वेष को शांत कर जाए।
भाषा वह जो आँखों को पढ़ ले,
आँसुओं को भी शब्दों में गढ़ ले,
मौन को भी अभिव्यक्ति दे जाए,
दूरियों को पास में सिमटाए।
जब तक धड़कनें बोलती रहेंगी,
जब तक साँसों में जीवन बहेगा,
तब तक भाषा से बंधा रहेगा,
यह मानव, यह प्रेम, यह जग सारा।"

- कालिंगराजु
हिंदी शिक्षक

धन्यवाद